International Journal of Home Science 2019; 5(1): 161-164

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2019; 5(1): 161-164
© 2019 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 22-11-2018
Accepted: 26-12-2018

डॉ. दीपा स्वामी
सह आचार्य, राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत

प्रियंका नागर
सह आचार्य, राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत

Correspondence
डॉ. दीपा स्वामी
सह आचार्य, राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत

कैथून कस्बे की बुनकर महिलाओं की सामाजिक दशा

डॉ. दीपा स्वामी, प्रियंका नागर

सारांश
कोटा जिले के कैथून विभाग जो कोटा डोरिया के लिए विख्यात है वहाँ बुनकरों द्वारा कोटा डोरिया बनाया जाता है। उनमें से कुछ महिलाऐं भी है जो इस क्षेत्र से जुड़ी हुई है। कैथून कस्बे की बुनकर महिलाओं का विश्लेषण उनकी दशा को प्रस्तुत करता है । समाज में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करता है। उनके अर्न्तमन में छिपी हुई पीड़ा उनके द्वारा उकेरी गई अद्भूत कला को उनकी ताकत बनाकर जीवन की कठिनाईयों का सामना करने में मदद करता है अतः उपरोक्त अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य मौजूदा अध्ययन में बुनकर महिलाओं की सामाजिक दशा को वर्तमान एवं पूर्व स्थित के पक्ष में प्रस्तुत करना है। बुनकर महिलाओं की पूर्व व वर्तमान भागीदारी पारिवारिक परिवेश को सुनिश्चित करती है। प्रभावशील वातावरण उनके व उनके पारिवारिक सदस्यों की उन्नति में भागीदार होता है। उनके विकास से परिवार विकसित होता है, उनके मतो को एक दिशा प्रदान करता है। सही दिशा एवं मार्गदर्शन से अपने मुकाम को हासिल करने की राह मिल जाती है। अध्ययन का प्रमुख आधार अवलोकन एवं साकारात्मक साक्षात्कार पर तथ्य संग्रह एवं विश्लेषण करना है । बुनकर महिलाओं का विश्लेषण करने पर उनकी सामाजिक दशा में सकारात्मक प्रभाव नजर आए। उनके द्वारा किए गए कार्य से उनकी व पारिवारिक दशा में सुधार नजर आया। पूर्व में उनको अनेक प्रथाओं का सामना करना पड़ता था जिससे उन्हें मानसिक एवं शारीरिक पीड़ा होती थी परन्तु वर्तमान में वे साहस से समाज में अपना अस्तित्व बना पाई। आज के दौर में वह समाज के अनेक कार्यों में भागीदार हो रही है। उनमें अलग ही आत्म विश्वास देखने को मिलता है जिसके कारण वह स्वयं को सशक्त बना सकी। सशक्तिकरण के कारण वह अन्य महिलाओं को भी प्रोत्साहित कर रही है और उनके विकास में सहयोग दे रही है।

कुट शब्दः बुनकर, विख्यात विश्लेषण, अर्न्तमन अद्भूत कला, सामाजिक, दशा, परिवेश, अस्तित्व, सशक्तिकरण

प्रस्तावना
राजस्थान के कोटा जिले के कैथून विभाग के अनूठे हस्तशिल्पों, विविध हाथ से बुने कपड़ों तथा हाथ करघा उत्पादों की आकर्षक श्रृंखला की रंगस्थली है। कैथून विभाग को विशेष रूप से कोटा डोरिया नामक विशेष डिजाइन व हाथ से बुननी वाली साड़ी के लिए प्रसिद्ध है। कैथून में राजसी पोशाक सामग्री की उच्च गुणवत्ता वाले सूती कपड़े उपलब्ध है। पर्यटक इस जगह से उत्कृष्ट निर्यात गुणवत्ता साड़ी और अन्य ड्रेस सामग्री खरीद सकते है। बदलते समाज साथ बुनाई का एक जीवंत दृश्य कैथून में एक अद्भूत अनुभव है। कैथून में ही विश्व प्रसिद्ध विभीषण मन्दिर स्थित है जो कैथून की प्रसिद्धि में चार चांद लगा देता है। इन्हीं दो विख्यात प्रसिद्धियों के लिए कैथून जाना जाता है वहीं कैथून कस्बा, राजस्थान में टेलीमेडिसीन सुविधा उपलब्ध करवाने में प्रथम है राजस्थान के कोटा जिले में स्थित कैथून में नगर पालिका स्थित है। कैथून की आबादी 24260 है। जिसमें से 12468 पुरूष है जबकि 11792 महिलाऐं है। कैथून नगरपालिका में कुल आबादी का 42.44% हिन्दू, 56.15% मुस्लिम, 0.30% सिक्ख, 1.80% जैन और 0.02% का वर्णन नही है। आज 2500 से ज्यादा बुनकर परिवार कोटा डोरिया जैसे जादुई वस्त्र के उत्पादन में लगे हुए है व पर्यावरण अनुकूल वानस्पतिक रेशों का प्रयोग साड़ी में करते है।

बुनकर का सामान्य अर्थ ''कपड़ा बनाने वाला''। भारत के अलग–अलग क्षेत्रों में बुनकरों को भिन्न नामों से जाना जाता है जुलाहा, जुग्गी, खत्री, डोम्बा, पटवे, पटनूली आदि बुनकर के ही भिन्न–भिन्न रूप है। अधिकाशं मुस्लिम समाज के लोग ही इस क्षेत्र में कार्यरत है। पहले लाखों लोग सूत कातकर, कपड़े बुनकर गुजारा करते थे। कई बुनकरों को तो यह कला विरासत में मिली व कुछ लोगों ने दूसरों से प्रभावित होकर यह कला अपनाई पुराने जमाने में कोटा के राजपरिवार के द्वारा कोटा डोरिया को संरक्षित उत्पाद माना जाता था। वर्तमान में इस कार्य से सम्पूर्ण हाड़ौती क्षेत्र में गरीब बुनकर परिवारों को मदद मिल रही है। कोटा डोरिया वस्त्र उत्पादन में कैथून के बुनकरों ने नई–नई रूप–रेखा को अनावरण किया है

जिसमें पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, फूल–पत्तियां आदि पर्यावरण अनुकूल डिजाइन सोने व चांदी के असली धागों से बनाई जाती है। बुनाई के दौरान परिवार के अधिकांश सदस्य भूमिका अदा करते है इन परिवारों का मुख्य व्यवसाय यही है और इसी से पारिवारिक आवश्यकताऐं पूर्ण होती है। इस कला में माहिर होने के कारण बुनकर अपने आप में पूर्ण है।

आज के समय में इसी कार्य को आगे बढ़ाने के लिए मुख्यतः महिलाऐं भी इस कार्य में अपनी भूमिका अदा कर रही है। बदलते समाज की सोच को बुनकर महिलाओं ने एकजुटता व मेहनत से बदल दिया। कई संस्थाऐं ऐसी भी है जो बुनाई के आधुनिक तौर तरीकों के बारे में बुनकर महिलाओं को प्रशिक्षण देती है जिससे उन्हें मेहनत व लगन के साथ कपड़े बनाने में मदद मिलती है। बुनकर के क्षेत्र में हर उम्र की महिलाऐ कार्यरत है। प्रारंभ में इस परिवर्तन की शुरूआत काफी मुश्किल थी लेकिन बुनाई का काम प्रारंभ होने के बाद इन महिलाओं में आत्मविश्वास आ गया। बुनकर महिलाऐं अपनी कलात्मक सोच के कारण कोटा डोरिया साड़ी में रचनात्मक कला का प्रदर्शन कर रही है। अपनी इसी सोच के फलस्वरूप वह समाज में अलग पहचान बना पाई जिससे उनके व्यक्तित्व में निखार आया। वर्तमान में बनुकर महिलाऐं सजग व जागरूक है।

महिलाओं के विकास व उन्नति के लिए हर क्षेत्र में उनकी भागीदारी आवश्यक है तब वह अपने दायित्वों का निर्वाह कर सकेगी तथा राष्ट्रीय विकास में पुरूषों के समान सक्रिय भूमिका अदा कर सकेगी भागीदारी के अभाव में महिलाऐं पिछड़ती जाएगी जो इस पुरूष प्रधान समाज में उनके अस्तित्व को बनाए रखने में घातक सिद्ध हो सकता है।

बुनकर के क्षेत्र में कार्य करने से महिलाओं की पूर्व व वर्तमान परिस्थिति में काफी अंतर देखने को मिलता है। महिलाएं अब आय के साथ–साथ सम्मान भी अर्जित, कर रही है। वर्तमान युग में कई महिलाएं जीविकापार्जन के लिए व कुछ अपने अस्तित्व में निखार लाने के लिए कार्य करती है। पूर्व में महिलाओं को अनेक शारीरिक एवं मानसिक वेदना के दौर से गुजरना पड़ता था। प्रत्येक समाज में स्त्रियों व पुरूषों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति उनके कार्यो व आदर्शो के अनुसार यह निश्चित करती है कि पारिवारिक, सामाजिक व आर्थिक जीवन में स्त्रियों व पुरूषों का महत्व कितना है और उनके क्या–क्या कार्य है। वर्तमान युग परिवर्तन का युग है और यही कारण है कि प्राचीन समय की महिलाओं की सोच में परिवर्तन आया है पूर्व में महिलाओं को अनेक प्रथाओं से प्रतिबद्ध कर रखा था परंतु बदलते दौर के कारण अब वह इन प्रथाओं से काफी हद तक मुक्त हो पायी है। अपना पक्ष रख सकती है व उनके पक्ष को सम्मान व स्वीकार भी किया जाता है। महिलाओं ने अपने पारिवारिक परिस्थिति में बदलाव करने के लिए इस कार्य की शुरूआत की। वर्तमान की महिलाऐं सजग व जागरूक होने के फलस्वरूप उन्हें आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्तर पर प्रोत्साहित किया जाने का दायित्व वर्तमान व्यवस्था का है। व्यवस्था के सहयोग से उनकी दृढ़निष्ठा, सोच व हस्तकला का हुनर उभर कर सामने आता है जिससे उनमें आत्मविश्वास पनपने लगा और वह अधिक निष्ठाभाव से उत्तम से उत्कृष्ठ राह पर चल पड़ी।

उद्देश्य

1. बुनकर महिलाओं की वर्तमान व पूर्व की भागीदारी सुनिश्चित करना।
2. बुनकर महिलाओं की सामाजिक दशा में आए परिवर्तन का निरीक्षण करना।
3. बुनकर महिलाओं की सामाजिक दशा से आए परिवर्तन का उनके व्यक्तित्व पर प्रभाव।
4. बुनकर महिलाओं की हस्तकला को प्रोत्साहित कर समाज में नया मुकाम हासिल करने पर जोर देना।

कार्यप्रणाली

किसी भी शोध कार्य में शोध के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु शोध यंत्र का निर्माण एवं चयन एक महत्वपूर्ण कार्य है। तथ्य संकलन हेतु प्रश्नावली विधि का चयन किया गया है। प्रश्नावली विधि में प्रश्नों की एक क्रम बद्ध सूची होती है जो अध्ययन विषय से संबंधित प्राथमिक तथ्यों को संकलित करने के लिए प्रयोग में लायी जाती है। सामाजिक कार्यो में कार्यरत बुनकर महिलाओं की भागीदारी का अध्ययन करने हेतु प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। जिसमें 30 बुनकर महिलाओं का अध्ययन किया गया है।

उत्तरदाताओं की परिचायक जानकारी जिसके अन्तर्गत सामान्य जानकारी में आयु, शिक्षा, लिंग तथा जाति से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई। तथ्य संकलन हेतु प्रतिबंधित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्रश्नावली विधि में 30 प्रश्न रखे गये है जिनमें से 10 प्रश्न सामाजिक परिवेश पर आधारित है, जिसमें 4 अलग–अलग विकल्प है। उन्हीं में से एक विकल्प चुनकर उन्हें अपना मत प्रस्तुत करना होगा। इसी क्रम में 20 प्रश्न हाँ/नहीं से संबंधित है जो बुनकर महिलाओं की पूर्व व वर्तमान सामाजिक दशा में आए परिवर्तन पर आधारित है।

इन सभी प्रश्नों का प्रतिशत निकालकर संबंधित क्षेत्र में बुनकर महिलाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया है।

1. उम्र व समय से संबंधित।
2. बुनाई प्रक्रिया से संबंधित।
3. आर्थिक स्थिति से संबंधित।
4. कच्चे व तैयार माल से संबंधित।

परिणाम व चर्चा

कोटा शहर के कैथून विभाग में चयनित उत्तरदाताओं की सामाजिक दशा से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की गई। तत्पश्चात तथ्यों को आंकड़ों व सारणी के रूप में संकलित कर इनका प्रतिशत निकालकर प्रस्तुत किया गया। बुनकर महिलाओं की भागीदारी को जानने का प्रयत्न किया गया ताकि उनकी भागीदारी से होने वाले लाभों को संसार के समक्ष रखकर उनका महत्व समझाया जा सके तथा अन्य क्षेत्रों में उनकी भागीदारी को प्रोत्साहन मिल सके। बेहतर परिणाम तो तभी प्राप्त होगें जब महिलाएं पहल करेगी इससे उन्हें इस पुरूष प्रधान समाज में अपनी पहचान प्राप्त होगी तथा वे आत्मनिर्भर होकर सफलता के नये नये आयामों को प्राप्त कर सकेगी।

सारणी संख्या 1: उम्र व समय से संबंधित आंकड़े

1. महिलाओं की उम्र	20–30 वर्ष		30–40 वर्ष		40–50 वर्ष		50 वर्ष से अधिक	
	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.
	15	50	5	16.66	2	6.66	7	23.33
2. कार्य के वर्ष	0–10 वर्ष		10–20 वर्ष		20–30 वर्ष		30 से अधिक	
	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.
	14	46.66	8	26.66	2	6.66	6	20
3. कार्य का समय	प्रातः से दोपहर		दोपहर से दोपहर बाद		दोपहर बाद से शाम		प्रातः से शाम	
	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.
	3	10	3	10	0	0	24	80

सारणी संख्या–1 में दिये गये आंकड़ों के अनुसार बुनकर महिलाओं के सामाजिक परिवेश में पाया गया कि बुनकर महिलाओं में 20–30 वर्ष की 50%, 30–40 वर्ष की 5%, 40–50 वर्ष की 6.66%, व 50 से अधिक वर्ष की 23.33% महिलाएं भागीदार है। महिलाओं के कार्य करने के वर्ष में 0–10 वर्ष में 46.66%, 10–20 वर्ष में 26.66%, 20–30 वर्ष में 6.66% व 30 से अधिक में 20% महिलाएं है। वे अपना कार्य अलग–अलग समय पर करती है जिसमें प्रातः से दोपहर तक 10%, दोपहर से दोपहर बाद 10% व प्रातः से शाम तक 80% बुनकर महिलाएं कार्य करती है।

सारणी संख्या 2: बुनाई प्रक्रिया से संबंधित आंकड़े

1. बुनाई के दौरान सहयोग	पति		बच्चे		परिवार के अन्य सदस्य		उपरोक्त में से कोई नहीं	
	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.
	0	0	4	13.33	15	50	11	36.66
2. बुनाई का स्थान	स्वयं के घर		अन्य के घर		संस्था में		उपरोक्त में से कोई नहीं	
	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.
	28	93.33	2	6.66	0	0	0	0

सारणी संख्या–2 में दिये गये आंकड़ों के अनुसार बुनाई के दौरान बच्चों की भूमिका 13.33% परिवार के अन्य सदस्यों की भूमिका 50% व केवल स्वयं की 36.66% भूमिका होती है वहीं 93.33% स्वयं के घर व 6.66% महिलाएं अन्य के घर बुनाई का कार्य करती है।

सारणी संख्या 3: आर्थिक स्थिति से संबंधित आंकड़े

1. आर्थिक स्थिति में सुधार	0–25%		25–50%		50–75%		75–100%	
	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.
	24	80	6	20	0	0	0	0
2. वर्तमान स्थिति	बहुत अच्छी		अच्छी		ठीक		उपरोक्त में से कोई नहीं	
	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.
	1	3.33	18	60	11	36.66	0	0
3. पूर्व की स्थिति	बहुत अच्छी		अच्छी		ठीक		उपरोक्त में से कोई नहीं	
	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.
	1	3.33	25	83.33	4	13.33	0	0

सारणी संख्या–3 में दिये गये आकड़ों के अनुसार बुनकर महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार के अन्तर्गत 0–25% में 80% व 25–50% में 20% की वृद्धि हुई है। उनकी वर्तमान स्थिति 3.33% बहुत अच्छी, 60% अच्छी व 36.66 ठीक है वहीं पूर्व की स्थिति 3.33% बहुत अच्छी, 83.33% अच्छी व 13.33% ठीक थी।

सारणी संख्या 4: कच्चे व तैयार माल से संबंधित आंकड़े

1. कच्चा माल खरीदना	स्वयं		प्रति.		अन्य		उपरोक्त में से कोई नहीं	
	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.
	14	46.66	1	3.33	15	50	0	0
2. तैयार माल बेचना	स्वयं बाजार जाकर				संस्था द्वारा		उपरोक्त सभी	
	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.	आ.	प्रति.
	1	3.33	0	0	29	96.66	0	0

सारणी संख्या–4: में दिये गये आंकड़ों के अनुसार कच्चे माल को खरीदने में 46.66% महिलाऐं स्वयं, 3.33% पति व 50% अन्य की भूमिका होती है। वहीं तैयार माल को बेचने में 3.33% स्वयं बाजार जाकर व 96.66% संस्था द्वारा बेचा जाता है।

सारणी संख्या 5: विभिन्न मुद्दों पर हाँ/नहीं से संबंधित आंकड़े

क्र.सं.	मुद्दे	हाँ		नहीं	
		आ.	प्रति.	आ.	प्रति.
1	स्वयं के अन्दर कोई परिवर्तन आया।	30	100	0	0
2	सहयोग में परिवार को लाभ है।	30	100	0	0
3	परिवार की सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वयं की है?	5	16.67	25	83.33
4	स्वयं के निर्णय स्वयं लेना।	30	100	0	0
5	मत को हमेशा सम्मान मिलता है।	10	33.34	20	66.66
6	सामाजिक स्थिति में सुधार।	30	100	0	0
7	प्रथाओं में खुलापन मिलता है।	30	100	0	0
8	दूसरों को प्रोत्साहन ।	30	100	0	0
9	प्रारंभ में कठिनाइयों का सामना।	22	73.33	8	26.67
10	कुछ अधिकार प्राप्त हुए।	30	100	0	0
11	डिजाइन के काम में मदद।	10	33.34	20	66.66
12	डिजाइन स्वयं की पसंद की।	9	30	21	70

13	जीविकापार्जन के लिए कार्य।	30	100	0	0
14	समाज का नजरिया बदला।	30	100	0	0
15	शारीरिक व मानसिक थकान।	11	36.67	19	63.33
16	घर से निकलते समय अनुमति लेना।	24	80	6	20
17	नारी जाति को प्रेरणा मिली।	30	100	0	0
18	सोच में परिवर्तन आया।	30	100	0	0
19	मत को सम्मान मिला।	19	63.33	11	36.67
20	पुरानी प्रथाओं से मुक्त हुए।	22	73.33	8	26.67

सारणी संख्या–5 में दिये गये आंकड़ों के अनुसार बुनकर महिलाओं की सामाजिक दशा पर अध्ययन में हाँ/नहीं से संबंधित प्रश्न पूछे गये जिनके आधार पर यह पाया गया कि बुनकर महिलाओं की वर्तमान व पूर्व सामाजिक दशा में परिवर्तन पाया गया।

इसमें पाया गया कि महिलाओं में स्वयं के अंदर 100% परिवर्तन आया। महिलाओं के सहयेाग से परिवार को 100% लाभ होता है वहीं परिवार की सम्पूर्ण जिम्मेदारी 66.67% महिलाओं की व 83. 33% परिवार के अन्य सदस्यों की है। सम्पूर्ण महिलायें अपने निर्णय स्वयं ही लेती है। 33.34% महिलाओं के मत को हमेशा सम्मान मिलता है। वही 66.66% महिलाओं के मत को अभी भी मान्यता नहीं दी जाती। सभी महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार आया। उनकी रूढ़ि वादी प्रथाओं में खुला पन नजर आया वहीं वह दूसरों को प्रोत्साहित भी करती है।

प्रारम्भ में 73.33% महिलाओं को कहीं कठिनाइयों का सामना करना पड़ा वहीं 26.67% महिलायें परिवार के सहयोग से यह कार्य अच्छे से कर पायी सभी महिलाओं को अपने व परिवार के हित में अधिकार प्राप्त हुए। बुनाई प्रक्रिया के दौरान डिजाइन बनाने में 33. 34% बुनकर महिलाओं की सहायता परिवार के सदस्य करते है व 66.66% महिलाओं को अभी भी स्वयं ही कार्य करना होता है कपड़े पर डिजाइन 30% महिलायें स्वंयं अपने पसन्द के अनुसार बनाती है और 70% महिलायें जैसा बतायी गई वैसी बनाती है।

इस कार्य से सभी महिलाओं को जीविकापार्जन होता है, समाज में उनको सम्मान प्राप्त हुआ जिससे सम्पूर्ण समाज का नजरिया बदला। कार्य को करते समय महिलाओं को भिन्न–भिन्न थकान का सामना भी करना पड़ता है जिससे शारीरिक व मानसिक थकान शामिल है। परिवार के सहयोग से 63.33% महिलाओं को काम करते समय किसी भी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता वहीं 36.67% महिलायें शारीरिक व मानसिक थकान महसूस करती है। किसी भी कार्य को करने के लिए आज भी महिलाये दूसरों पर निर्भर है इसी क्रम में 80% महिलओं को धर से निकलते समय परिवार के सदस्यों से अनुमति लेनी होती है और 20% महिलायें किसी पर निर्भर नहीं है।

महिलाओं के इस कार्य सम्पूर्ण नारी जाति को प्रेरणा मिली व सभी की सोच में परिवर्तन नजर आया। आज भी महिलाओं को अपने पक्ष में बोल पाने में हिचकिचाहट होती है इसलिए 63.33% महिलाओं के मत को सम्मान मिलता है और 36.67% महिलाओं के मत को अभी भी सम्मान नहीं मिला। महिलायें कहीं सालों से रूढ़िवादी प्रथाओ के जाल में फसीं हुई थी। लेकिन अब कुछ हद तक वह मुक्त हो गई है इसी कारण 73.33% महिलायें पुरानी प्रथाओं से मुक्त हुई व 26.67% महिलायें अब भी किसी न किसी प्रथा से जुड़ी हुई है।

इसमें पाया गया कि महिलाओं की कई सामाजिक दशा में 100% परिवर्तन आया व कुछ परिस्थितियों में कम या अधिक परिवर्तन देखा गया।

निष्कर्ष

प्राप्त तथ्यों में जानकारी प्राप्त हुई कि अधिकांश बुनकर महिलाओं की बुनाई प्रक्रिया में 100% भागीदारी थी। कच्चे माल से संबंधित क्षेत्र से जुड़े किसी भी मुद्दे में महिलाओं की कोई भागीदारी नहीं थी। प्राप्त तथ्यों से पता चलता है कि कोटा डोरिया निर्माण से जुड़े कुछ क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी 100% जबकि कुछ क्षेत्रों में उनकी भागीदारी का प्रतिशत शून्य था। महिलाओं की कोटा डोरिया निर्माण के प्रत्येक क्षेत्र में भागीदारी होने पर ही वे इस कार्य को अधिक कुशलता से कर पाएगी। महिलाओं की भागीदारी से पुरूषों की मानसिकता में बदलाव आया परन्तु अभी भी उनकी सोच को हर क्षेत्र में बदलाव की आवश्यकता है। इस अध्ययन में यह पाया गया कि कोटा डोरिया निर्माण में केवल महिलाओं की ही नहीं अपितु हर उम्र की महिला चाहे वह 19 साल की किशोरी हो या 60 वर्ष की वृद्ध महिला । हर उम्र की महिला का इसमें महत्वपूर्ण योगदान है। निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया कि बुनकरों में बुनाई की नवीनतम तकनीकी ज्ञान का अभाव था।महिलाओं की भागीदारी के मापन से भेदभाव व सहयोग पर आधारित समुदाय का निर्माण कर लिंग–संतुलन तथा सामाजिक न्याय की स्थापना की जा सकेगी। बुनकर महिलाओं की भागीदारी के मापन से यह निष्कर्ष निकाला गया कि महिलाओं की सभी क्षेत्रों में भागीदारी आवश्यक है। सामाजिक आर्थिक संख्या में महिलाओं तथा पुरूषों की समान भागीदारी समाज एवं देश के संतुलित विकास को बढ़ावा देगी।

संदर्भ सूची

1. Abdul N. Handloom in Distress. Economics and Political Weekly. 1996; 31(23):1384-1386.
2. Dr. Raju. Women Weavers: Gender differences and discrimination towards Women in India. Global Journal of Human Social Science. 2014; 12(8).
3. Mahapatro PC. Economics of Cotton Handloom Industry in India, Ashish Publishing House, New Delhi, 1996, 74-76.
4. Mukherjee S. Looms of Doom, Outlook India, 2004, 27.
5. Narasaiah L, Krishna T. Crisis of Handloom Industry. New Delhi: Discovery Publishing House, 1999.